



Raghvi

16 Mar 1998

04:15 PM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120860101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro

Delhi/ Prayagraj

astroshukhshanti@gmail.com

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 16/03/1998
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 16:15:00 घंटे
इष्ट _____: 24:21:21 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 15:53:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:08:45 घंटे
साम्पातिक काल _____: 03:29:10 घंटे
सूर्योदय _____: 06:30:27 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:29:45 घंटे
दिनमान _____: 11:59:17 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 01:48:43 मीन
लग्न के अंश _____: 03:12:17 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: स्वाति - 1
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: ध्रुव
करण _____: विष्टि
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: रू-रूपा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1919	फाल्गुन	25
पंजाबी	संवत : 2054	चैत्र	3
बंगाली	सन् : 1404	चैत्र	2
तमिल	संवत : 2054	पंगुनी	2
केरल	कोल्लम : 1173	मीनम	2
नेपाली	संवत : 2054	चैत्र	3
चैत्रादि	संवत : 2054	चैत्र	कृष्ण 3
कार्तिकादि	संवत : 2054	फाल्गुन	कृष्ण 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
तिथि समाप्ति काल _____ : 17:47:46
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : चित्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 15:20:57 घंटे
जन्म योग _____ : स्वाति
सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
योग समाप्ति काल _____ : 18:15:31 घंटे
जन्म योग _____ : ध्रुव
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 17:47:46 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 02:15:08
भभोग _____ : 67:12:50
भोग्य दशा काल _____ : राहु 17 वर्ष 4 मा 24 दि

घात चक्र

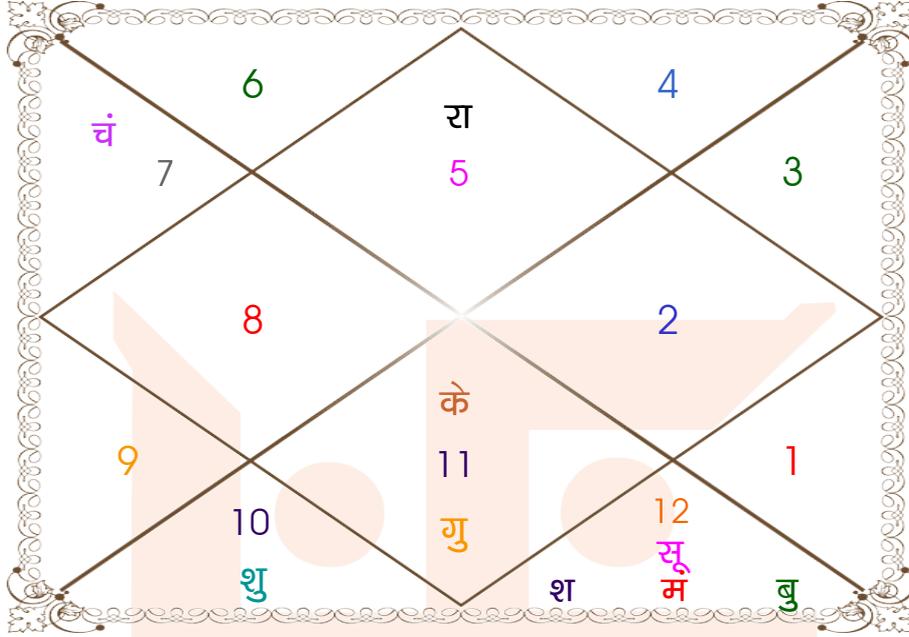
मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

Vedic Astrologer Parul

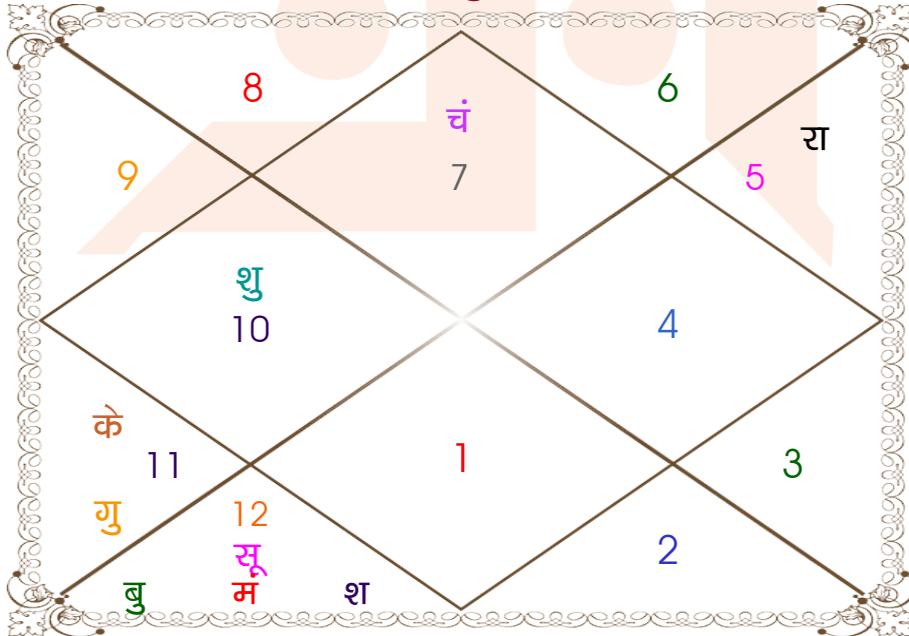
Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

बु सू म श			
के गु			
शु			रा ल
		चं	

लग्न कुण्डली

		बु सू म श	श
			के गु
			शु
ल रा		चं	

विंशोत्तरी
राहु 17वर्ष 4मा 24दि
राहु
16/03/1998
10/08/2117

राहु	09/08/2015
गुरु	09/08/2031
शनि	09/08/2050
बुध	09/08/2067
केतु	09/08/2074
शुक्र	09/08/2094
सूर्य	09/08/2100
चन्द्र	10/08/2110
मंगल	10/08/2117

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 11मा 6दि
संकटा
20/02/2025
20/02/2033

संकटा	01/12/2026
मंगला	20/02/2027
पिंगला	01/08/2027
धान्या	01/04/2028
भामरी	20/02/2029
भद्रिका	01/04/2030
उल्का	01/08/2031
सिद्धा	20/02/2033

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

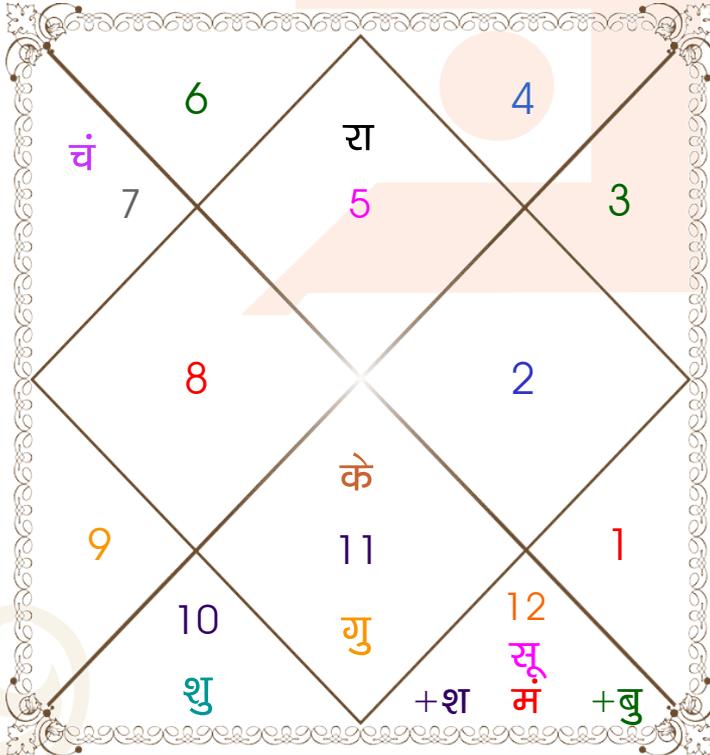
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	03:12:17	311:15:16	मघा	1	10	सूर्य	केतु	सूर्य	---
सूर्य			मीन	01:48:43	00:59:44	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	मित्र राशि
चंद्र			तुला	07:06:43	11:51:39	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	सम राशि
मंगल		अ	मीन	15:15:06	00:46:04	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मित्र राशि
बुध			मीन	19:32:21	01:21:51	रेवती	1	27	गुरु	बुध	शुक्र	नीच राशि
गुरु			कुंभ	15:44:53	00:14:10	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	सम राशि
शुक्र			मक	15:52:47	00:53:40	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	मित्र राशि
शनि			मीन	26:01:53	00:07:10	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	सम राशि
राहु		व	सिंह	16:39:37	00:02:18	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि
केतु		व	कुंभ	16:39:37	00:02:18	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	17:23:53	00:02:44	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	---
नेप			मक	07:41:21	00:01:31	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
प्लूटो		व	वृश्चि	14:13:31	00:00:11	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			वृष	00:49:08	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	राहु	--

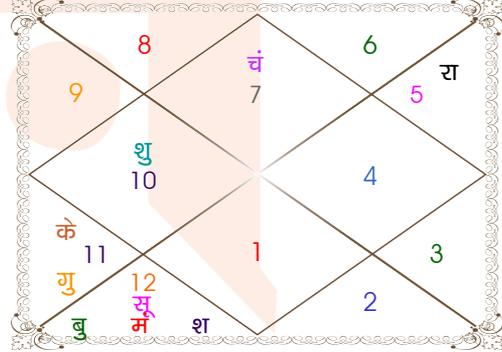
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:49

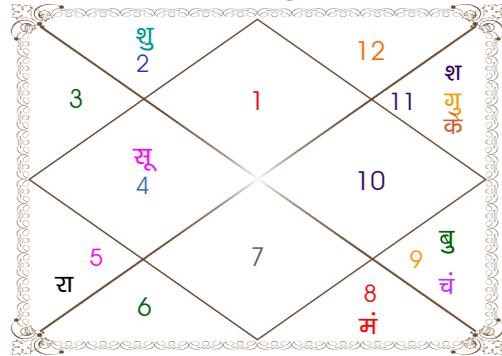
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro

Delhi/ Prayagraj

astroshukhshanti@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 17:48:26	सिंह 03:12:17
2	सिंह 17:48:26	कन्या 02:24:34
3	कन्या 17:00:43	तुला 01:36:51
4	तुला 16:13:00	वृश्चिक 00:49:08
5	वृश्चिक 16:13:00	धनु 01:36:51
6	धनु 17:00:43	मकर 02:24:34
7	मकर 17:48:26	कुम्भ 03:12:17
8	कुम्भ 17:48:26	मीन 02:24:34
9	मीन 17:00:43	मेष 01:36:51
10	मेष 16:13:00	वृष 00:49:08
11	वृष 16:13:00	मिथुन 01:36:51
12	मिथुन 17:00:43	कर्क 02:24:34

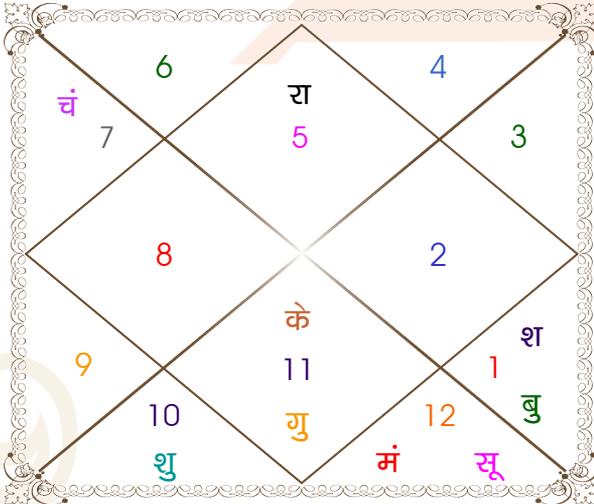
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	03:12:17
2	सिंह	28:54:57
3	कन्या	28:32:34
4	वृश्चिक	00:49:08
5	धनु	03:16:44
6	मकर	04:14:26
7	कुम्भ	03:12:17
8	कुम्भ	28:54:57
9	मीन	28:32:34
10	वृष	00:49:08
11	मिथुन	03:16:44
12	कर्क	04:14:26

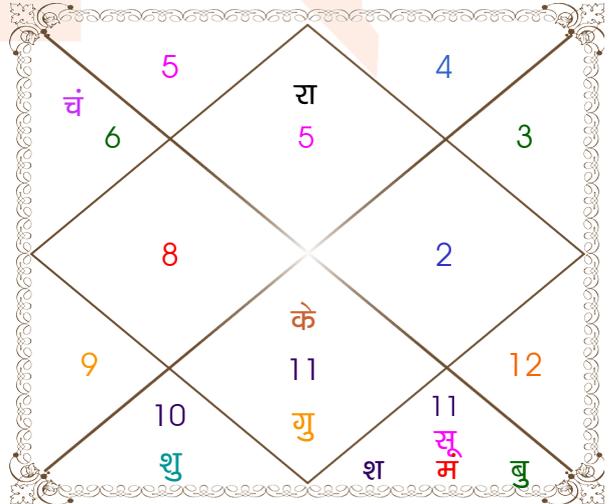
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 17 वर्ष 4 मास 24 दिन

राहु 18 वर्ष 16/03/1998 09/08/2015	गुरु 16 वर्ष 09/08/2015 09/08/2031	शनि 19 वर्ष 09/08/2031 09/08/2050	बुध 17 वर्ष 09/08/2050 09/08/2067	केतु 7 वर्ष 09/08/2067 09/08/2074
राहु 21/04/2000	गुरु 26/09/2017	शनि 12/08/2034	बुध 05/01/2053	केतु 05/01/2068
गुरु 14/09/2002	शनि 09/04/2020	बुध 21/04/2037	केतु 02/01/2054	शुक्र 06/03/2069
शनि 21/07/2005	बुध 16/07/2022	केतु 31/05/2038	शुक्र 02/11/2056	सूर्य 12/07/2069
बुध 08/02/2008	केतु 21/06/2023	शुक्र 31/07/2041	सूर्य 08/09/2057	चंद्र 10/02/2070
केतु 25/02/2009	शुक्र 19/02/2026	सूर्य 13/07/2042	चंद्र 08/02/2059	मंगल 09/07/2070
शुक्र 26/02/2012	सूर्य 09/12/2026	चंद्र 11/02/2044	मंगल 05/02/2060	राहु 28/07/2071
सूर्य 20/01/2013	चंद्र 09/04/2028	मंगल 22/03/2045	राहु 24/08/2062	गुरु 03/07/2072
चंद्र 22/07/2014	मंगल 16/03/2029	राहु 27/01/2048	गुरु 29/11/2064	शनि 12/08/2073
मंगल 09/08/2015	राहु 09/08/2031	गुरु 09/08/2050	शनि 09/08/2067	बुध 09/08/2074

शुक्र 20 वर्ष 09/08/2074 09/08/2094	सूर्य 6 वर्ष 09/08/2094 09/08/2100	चंद्र 10 वर्ष 09/08/2100 10/08/2110	मंगल 7 वर्ष 10/08/2110 10/08/2117	राहु 18 वर्ष 10/08/2117 00/00/0000
शुक्र 08/12/2077	सूर्य 27/11/2094	चंद्र 10/06/2101	मंगल 06/01/2111	राहु 17/03/2118
सूर्य 09/12/2078	चंद्र 28/05/2095	मंगल 09/01/2102	राहु 25/01/2112	00/00/0000
चंद्र 08/08/2080	मंगल 03/10/2095	राहु 11/07/2103	गुरु 30/12/2112	00/00/0000
मंगल 09/10/2081	राहु 27/08/2096	गुरु 09/11/2104	शनि 08/02/2114	00/00/0000
राहु 08/10/2084	गुरु 15/06/2097	शनि 10/06/2106	बुध 06/02/2115	00/00/0000
गुरु 09/06/2087	शनि 28/05/2098	बुध 09/11/2107	केतु 05/07/2115	00/00/0000
शनि 09/08/2090	बुध 03/04/2099	केतु 10/06/2108	शुक्र 03/09/2116	00/00/0000
बुध 09/06/2093	केतु 09/08/2099	शुक्र 08/02/2110	सूर्य 09/01/2117	00/00/0000
केतु 09/08/2094	शुक्र 09/08/2100	सूर्य 10/08/2110	चंद्र 10/08/2117	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 17 वर्ष 4 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र 21/06/2023 19/02/2026	गुरु - सूर्य 19/02/2026 09/12/2026	गुरु - चंद्र 09/12/2026 09/04/2028	गुरु - मंगल 09/04/2028 16/03/2029	गुरु - राहु 16/03/2029 09/08/2031
शुक्र 01/12/2023 सूर्य 19/01/2024 चंद्र 09/04/2024 मंगल 04/06/2024 राहु 29/10/2024 गुरु 07/03/2025 शनि 09/08/2025 बुध 25/12/2025 केतु 19/02/2026	सूर्य 06/03/2026 चंद्र 30/03/2026 मंगल 16/04/2026 राहु 30/05/2026 गुरु 08/07/2026 शनि 24/08/2026 बुध 04/10/2026 केतु 21/10/2026 शुक्र 09/12/2026	चंद्र 18/01/2027 मंगल 16/02/2027 राहु 30/04/2027 गुरु 04/07/2027 शनि 19/09/2027 बुध 27/11/2027 केतु 25/12/2027 शुक्र 15/03/2028 सूर्य 09/04/2028	मंगल 29/04/2028 राहु 19/06/2028 गुरु 03/08/2028 शनि 26/09/2028 बुध 13/11/2028 केतु 03/12/2028 शुक्र 29/01/2029 सूर्य 15/02/2029 चंद्र 16/03/2029	राहु 25/07/2029 गुरु 19/11/2029 शनि 07/04/2030 बुध 09/08/2030 केतु 29/09/2030 शुक्र 22/02/2031 सूर्य 07/04/2031 चंद्र 19/06/2031 मंगल 09/08/2031
शनि - शनि 09/08/2031 12/08/2034	शनि - बुध 12/08/2034 21/04/2037	शनि - केतु 21/04/2037 31/05/2038	शनि - शुक्र 31/05/2038 31/07/2041	शनि - सूर्य 31/07/2041 13/07/2042
शनि 30/01/2032 बुध 04/07/2032 केतु 06/09/2032 शुक्र 08/03/2033 सूर्य 02/05/2033 चंद्र 02/08/2033 मंगल 05/10/2033 राहु 18/03/2034 गुरु 12/08/2034	बुध 29/12/2034 केतु 25/02/2035 शुक्र 07/08/2035 सूर्य 26/09/2035 चंद्र 17/12/2035 मंगल 12/02/2036 राहु 08/07/2036 गुरु 16/11/2036 शनि 21/04/2037	केतु 15/05/2037 शुक्र 21/07/2037 सूर्य 10/08/2037 चंद्र 13/09/2037 मंगल 07/10/2037 राहु 07/12/2037 गुरु 29/01/2038 शनि 04/04/2038 बुध 31/05/2038	शुक्र 10/12/2038 सूर्य 06/02/2039 चंद्र 13/05/2039 मंगल 19/07/2039 राहु 09/01/2040 गुरु 11/06/2040 शनि 11/12/2040 बुध 24/05/2041 केतु 31/07/2041	सूर्य 17/08/2041 चंद्र 15/09/2041 मंगल 05/10/2041 राहु 26/11/2041 गुरु 11/01/2042 शनि 07/03/2042 बुध 25/04/2042 केतु 16/05/2042 शुक्र 13/07/2042
शनि - चंद्र 13/07/2042 11/02/2044	शनि - मंगल 11/02/2044 22/03/2045	शनि - राहु 22/03/2045 27/01/2048	शनि - गुरु 27/01/2048 09/08/2050	बुध - बुध 09/08/2050 05/01/2053
चंद्र 30/08/2042 मंगल 02/10/2042 राहु 28/12/2042 गुरु 15/03/2043 शनि 15/06/2043 बुध 05/09/2043 केतु 09/10/2043 शुक्र 13/01/2044 सूर्य 11/02/2044	मंगल 05/03/2044 राहु 05/05/2044 गुरु 28/06/2044 शनि 31/08/2044 बुध 28/10/2044 केतु 20/11/2044 शुक्र 27/01/2045 सूर्य 16/02/2045 चंद्र 22/03/2045	राहु 25/08/2045 गुरु 11/01/2046 शनि 24/06/2046 बुध 19/11/2046 केतु 19/01/2047 शुक्र 11/07/2047 सूर्य 01/09/2047 चंद्र 27/11/2047 मंगल 27/01/2048	गुरु 29/05/2048 शनि 23/10/2048 बुध 03/03/2049 केतु 26/04/2049 शुक्र 27/09/2049 सूर्य 12/11/2049 चंद्र 28/01/2050 मंगल 23/03/2050 राहु 09/08/2050	बुध 12/12/2050 केतु 01/02/2051 शुक्र 27/06/2051 सूर्य 10/08/2051 चंद्र 23/10/2051 मंगल 13/12/2051 राहु 23/04/2052 गुरु 18/08/2052 शनि 05/01/2053

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro

Delhi/ Prayagraj

astroshukhshanti@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 1
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

Vedic Astrologer Parul

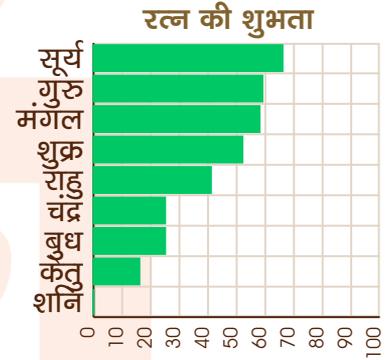
Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	66%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	59%	दम्पति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मूंगा	मंगल	58%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	41%	रोग, दुर्घटना
मोती	चंद्र	25%	पराक्रम हानि, व्यय
पन्ना	बुध	25%	दुर्घटना, हानि, धन हानि
लहसुनिया	केतु	16%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	09/08/2015	53%	0%	41%	25%	59%	58%	0%	58%	0%
गुरु	09/08/2031	72%	38%	64%	0%	72%	28%	0%	41%	16%
शनि	09/08/2050	53%	0%	41%	38%	59%	58%	0%	52%	0%
बुध	09/08/2067	72%	0%	58%	50%	59%	58%	0%	41%	16%
केतु	09/08/2074	53%	0%	64%	25%	59%	58%	0%	16%	41%
शुक्र	09/08/2094	53%	0%	58%	38%	59%	64%	0%	52%	28%
सूर्य	09/08/2100	78%	38%	64%	25%	66%	28%	0%	16%	0%
चंद्र	10/08/2110	72%	50%	58%	38%	59%	52%	0%	16%	0%
मंगल	10/08/2117	72%	38%	70%	0%	66%	52%	0%	16%	28%

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुण्डली में जन्म के समय मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु नियमानुसार आपका मांगलिक दोष भंग हो रहा है। अतः यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं विवाह के उपरान्त पति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। यदा कदा वे सामान्य रूप से अस्वस्थ रह सकते हैं लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। साथ ही इसके शुभ प्रभाव से आप विद्याध्ययन में सफल होंगी तथा उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगी। भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगी जीवन में उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए अनुकूल फलदायक होगा तथापि इसके प्रभाव से आपकी शादी में अल्प मात्रा में विलम्ब हो सकता है। विवाह शान्ति पूर्ण ढंग से सम्पन्न होगा एवं इसमें आपको किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं या व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। यदा कदा पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा जिससे अल्प मात्रा में दाम्पत्य सुख में कष्टानुभूति प्राप्त कर सकती हैं। परन्तु सामान्यतया आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे तथा मांगल्य स्थान होने से पति का स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा एवं दाम्पत्य सुख में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप की आय उत्तम होगी एवं धनैश्वर्य का अभाव नहीं होगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप एक शिक्षित महिला होंगी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी सफल

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

हो सकती हैं। आपका पारिवारिक जीवन भी शान्ति एवं वैभव से परिपूर्ण रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप भाई बहनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में उनका वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त कर सकेंगी। इस प्रकार जीवन में आप प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में सफल हो सकेंगी तथा हमेशा प्रसन्न चित्त रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुख एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमंगली या ऐसे मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष नियमानुसार समाप्त हो रहा हो। इस प्रकार से यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगी तो जीवन में पूर्ण सौभाग्य धनैश्वर्य एवं मान सम्मान प्राप्त करके समाज में यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगी।

इसके अतिरिक्त जन्मपत्री मिलान के समय अष्टम भाव में ही स्थित पुरुष की कुण्डली में यदि मंगल स्थित हो तो ऐसे में विवाह की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य विलम्ब या व्यवधानों से युक्त होंगे तथा पति के स्वास्थ्य के लिए भी विशेष अशुभ सिद्ध होगा। अन्य भावों में स्थित मंगल से शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा आपका सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कुण्डली मिलान करें जिससे जीवन में अनावश्यक कठिनाईयां एवं समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro

Delhi/ Prayagraj

astroshukhshanti@gmail.com

और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्चल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरों के लिए आप शुभ एवं

अनुकूल रहेंगी।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए उद्यत रहेंगी।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- गुरु
(09/08/2015 - 09/08/2031)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 09/08/2015 को आरम्भ तथा 09/08/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

धार्मिक मानसिकता के कारण आप अपना अधिकतर समय शास्त्रों तथा धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लगाएंगे।



Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(21/06/2023 - 19/02/2026)**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 09/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 21/06/2023 को प्रारंभ होकर 19/02/2026 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप स्पर्धियों पर सफलता प्राप्त करेंगे। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। कर्ज अदा कर सकेंगे। खानपान का ध्यान रखें; गरिष्ठ भोजन न लें। सुख के साधन उपलब्ध रहेंगे। अध्यात्म और दया-धर्म में रुचि होगी। साख और सम्मान में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता लोकप्रिय और सफल होंगे। माता की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, अप्रत्याशित परिवर्तन, उपहार, वसीयत या साझेदार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की विभिन्न क्षेत्रों में प्रशंसा होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त करेंगे। परामर्शदाता धनी बनेंगे, भाग्यशाली होंगे। व्यापारियों को आय-व्यय दोनों का योग है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए महिलाओं या गरीबों की सेवासंस्था में कार्य करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(19/02/2026 - 09/12/2026)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/02/2026 को प्रारंभ होकर 09/12/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपको अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। विरासत, बीमा, ग्रेच्युटी, बोनस आदि से लाभ हो सकता है। सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। कार्यक्षेत्र में लाभ होगा। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखी होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी। वाक्शक्ति उत्तम होगी। धन पर्याप्त रहेगा, सरकार से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी होंगे; उन्हें पिता से लाभ होगा। आपके पिता की यात्राएं हो सकती हैं; खर्चे बढ़ेंगे। माता को उच्चपद मिल सकता है, धनी बनेंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए धन, उच्चपद, कार्यक्षेत्र में सफलता का संकेत है।

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजय होगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, संचार माध्यम और विज्ञापन जगत से लाभ होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कई माध्यमों से धनागम होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का 40 दिन तक पाठ करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(09/12/2026 - 09/04/2028)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 09/12/2026 को आरंभ होकर 09/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे। साहित्य और संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। वाक्शक्ति उत्तम होगी। छोटे भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। उत्तम वस्त्र प्राप्त होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी। लघु यात्राएं हो सकती हैं। भाग्यशाली, प्रसन्न और धनी होंगे। संतान से सुख मिलेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी बनेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए विरासत से लाभ, सुखी पारिवारिक जीवन, सरकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, बहुत से मित्र होंगे, सफलता मिलेगी। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, कुछ परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कुमारी कन्या को हरे वस्त्र दान में दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल
(09/04/2028 - 16/03/2029)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/04/2028 को प्रारंभ होकर वद 16/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। साझेदार से लाभ होगा। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। अप्रत्याशित घटनाएं घट सकती हैं। धनार्जन होगा, मगर खर्च बढ़ सकते हैं। शिक्षा उत्तम होगी, प्रसिद्धि मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी। कला में दक्षता प्राप्त होगी। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। कम परिश्रम से अधिक लाभ होगा। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा; पारिवारिक जीवन सुखी होगा, समृद्ध बनेंगे। पिता के खर्च बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय और कार्यक्षेत्र में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजय होगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

गर्मी से संबंधित बीमारियों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए तंदूर में बनी मीठी रोटी बांटें।

**अंतर्दशा :- गुरु - राहु
(16/03/2029 - 09/08/2031)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 16/03/2029 को प्रारंभ होकर 09/08/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आपका आत्मविश्वास उत्तम होगा, प्रसिद्ध बनेंगे। आप में नेतृत्व की उत्तम शक्ति है। आप धनी बनेंगे; सुख के साधन उपलब्ध होंगे। अध्यात्म और तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। मानसिक तनाव से रहित रहेंगे। नये उद्यम की योजना बना सकते हैं; लाभ में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन में कुछ तनाव हो सकता है; इसे नीति और धैर्य द्वारा दूर कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को व्यापार और साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता की तीर्थयात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए समृद्धि, प्रभावशाली मित्र, आर्थिक सुअवसर, उत्साह और दृढ़निश्चय का संकेत है।

आपकी संतान उत्कृष्टता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे, यात्रा होगी, किस्मत चमकेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक धनागम हो सकता है। परामर्शदाताओं को पहले किये निवेश से लाभ हो सकता है। व्यापारियों को साझेदारों के माध्यम से धनलाभ होगा।

स्वास्थ्य का, विशेषकर शरीर के ऊपरी अंगों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की पूजा, भैरव रूप में शनिवार के दिन करें।



Vedic Astrologer Parul

Shukh Shanti Astro
Delhi/ Prayagraj
astroshukhshanti@gmail.com